15 / 01 / 83 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

सदा सहजयोगी की स्थिति की अनुभूति

➢➢ मैं आत्मा स्वयं को बापदादा की सहयोगी भुजा के रूप में देख रही हूँ।

➳ _ ➳ मैं हर श्रेष्ठ कार्य मे बापदादा की सहयोगी बन उसे सफल कर रही हूँ।

→ मेरे दिव्य अलौकिक कार्य की रफ्तार देख बापदादा भी हर्षित हो रहे है।

■ मैं सदा अथक हूँ।

■ मैं हर श्रेष्ठ कार्य मे तीव्र गति से बाप की सहयोगी हूँ।

■ मेरे दिव्य अलौकिक कार्य की रफ्तार दूसरों के लिए भी प्रेरणा स्रोत बन रहे है।

➳ _ ➳ मैं सदा सहजयोगी की स्थिति में स्थित हूँ।

→ बाप के साथ समीप संबंध की अनुभूति कर रही हूँ।

→ सर्व प्राप्तियों की खुशी मुझे स्वतः ही सहजयोग का अनुभव करा रही है।

■ मैं सदा समर्थ स्वरूप हूँ।

■ मैं हूँ ही एक बाप की।

➢➢ मैं निश्चयबुद्धि निश्चिंत आत्मा हूँ।

➳ _ ➳ मैं सहजयोगी आत्मा सदा श्रेष्ठ उमंग उत्साह और खुशी में एकरस अवस्था का अनुभव कर रही हूँ।

→ मैं सहजयोगी आत्मा सर्व प्राप्तियों की अधिकारी हूँ।

■ मैं महान आत्मा हूँ।

➳ _ ➳ सदा सहजयोगी की स्थिति द्वारा मुझ आत्मा को सर्व सिद्धियाँ स्वतः ही प्राप्त होती जा रही है।

→ सदा शक्तिशाली स्थिति में स्थित हूँ।

■ मैं सफलता मूरत हूँ।

➢➢ मैं अधिकारी स्वरूप सहजयोगी हूँ।

➳ _ ➳ मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ।

→ साक्षीद्रष्टा हूँ।

■ बाप की दिलतख्तनशी बच्ची हूँ।

➳ _ ➳ सदा बाप के स्नेह की चात्रक हूँ।

→ मैं विशेष आत्मा हूँ।

■ सदा दिल से मेरा बाबा के गीत के बोल ही निकल रहे है।

➳ _ ➳ मैं सुख के सागर की बच्ची बन सुख के सागर में समाती जा रही हूँ।

→ मैं सुख स्वरूप बन गयी हूँ।

■ विधि द्वारा सिद्धि की प्राप्ति की अनुभूति कर रही हूँ।